Accepted: June '22
© 2022 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

Received: May '22
Revised:

प्रखा खेतान के साहित्य में भारतीय नारी का स्वरूप

डॉ0 ज्योति पाण्डेय
अतिथि विद्वान, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह विश्वविद्यालय, रीवा मध्यप्रदेश

भारतीय परिवेश के हिसाब से नारी जाति का यदि उचित अवलोकन किया जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि हमारी भारतीय संस्कृति में सचमुच में नारी महान स्थान ग्रहण करती हैं। स्त्री पुरूष के वर्ग भेद को मिटाने के लिए आर्थिक स्वावलम्बन के महत्व को प्रभा जी ने सिद्वत से स्वीकार किया है। इसलिए प्रभाजी के साहित्य में स्थित समस्त स्त्री पात्र अपने अस्तित्व को स्थापना करने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता को जीने के पहली शर्त मानते हैं। वह अपनी जेब या पर्स को हमेशा नोटों से भरी होना अत्यावश्यक मानते हैं। समाज से लड़ने के लिए आर्थिक रूप में सम्पन्न और स्वतंत्र होना उन्हे बहुत जरूरी लगता है। इसलिए 'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास की नायिका प्रभा के माध्यम से प्रभा जी कहती हैं कि–

नहीं मेरी लड़ाई उसी समाज से चलेगी। आप नहीं जानती बहन जो औरत की सारी स्वतंत्रता उसके पर्स में निहित है।

प्रभा जी स्त्री सशक्तिकरण के लिए स्त्री का आर्थिक स्वावलंबन बहुत जरूरी समझती हैं। स्त्री अगर आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी रही तो उस पर जुल्म नहीं होने से औरत का स्वाभिमान और आत्म सम्मान बढ़ता है। साथ ही वह प्रतिकूल परिस्थितियों और प्रतिबंधों को नकारने की क्षमता हासिल करती हैं। वह समाज की संकीर्ण परंपराओं से मुक्ति पा सकती हैं। स्त्री के आर्थिक स्वावलंबन के महत्वपूर्ण पक्ष को लेकर रमणिका गुप्ता भी लिखती हैं कि–

''स्वावलंबन स्त्री में स्वाभिमान पैदा करता है। और स्वाभिमान उन्हे चेतना से सम्पन्न करता है। और वही चेतना उनकी समर्थ्य का निर्माण करती हैं। और उसे संगठित होने के लिए प्रेरित भी करती हैं।''

प्रभा जी अपने लेखन से स्त्री को पुरूष के समान महत्व दिलाना चाहतीं हैं। उनका मार्क्सवादी दृष्टिकोण स्त्री पुरूष में समानता स्थापित कर राम राज्य की कल्पना को साकार करते हुए नजर आता है। जितनी आजादी पुरूष व्यवस्था ने पुरूष को दी है उतनी ही आजादी स्त्री को भी दिलाना चाहतीं हैं। उसी तरह उनका स्त्रीवादी दृष्टिकोण स्त्री के जन्म को उचित महत्व प्रदान करना चाहता है। प्रभा जी स्त्री से बलात्कार करने वाले पुरूष को सजा दिलाना चाहतीं हैं।

मानव निर्मित कानून का मातृत्व के साथ कोई हस्तक्षेप नहीं चाहतीं। इतना ही नहीं ऐच्छिक मातृत्व से वंचित न हो सके वह बच्चा पैदा करने का महज मशीन बनकर न रह जाए उसके गर्भ पर पुरूष का कानूनन तथा सामाजिक रूप से कोई नियंत्रण न रहे, वंष माँ के नाम से चले, स्त्री सृष्टि की भूमिका निभाएँ आदि जानना चाहिती हैं।

प्रभाजी के लेखन साहित्य में हमे कारखाने और दफ्तर में काम करती हुई स्त्री साहित्य क्षेत्र में कुछ लिखती रचती हुई स्त्री पुरूष से प्रेम के द्वंद्व में उलझी हुई स्त्री, मानवीय गरिमा की खोज में जुटी हुई स्त्री, बौद्धिक बनती हुई स्त्री, क्रांति के दर्शन से दो–चार होती हुई स्त्री और भाषाव विमर्श के जंजाल में फंसी हुई स्त्री के भी प्रखरता से दर्शन होते हैं। प्रभा जी का स्त्रीवादी दृष्टिकोण और उससे संबंधित लेखन अपने–आप में एक महत्वपूर्ण उद्देश्य रखता है। प्रभाजी अपने लेखन को लेकर स्वयं लिखती हैं कि–

''स्त्री लेखन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य स्त्री की भूमिकाओं के बारे में मानव समाज का परिचय देता है। उन अंधेरे कोनो पर भी प्रकाश डालता है। जिसकी पीड़ा स्त्री ने सदियों झेली हैं।''

जरूरत है कि स्त्री अपनी मानवीय गरिमा और अधिकार को समझकर संरचनात्मक संस्कृति तथा मानवीय दृष्टिकोण के मूल तत्वों का विश्लेषण करें अपने लेखन में उन तमाम स्त्रियों को शक्ति दे जो संघर्षरत है तथा जो स्त्री समाज के विकास में सक्रीय है।

वे समाज की नजरों से दूर किसी कोने में दुबक रही हैं। जिनके गरिमा के नाम पर अपना शरीर है। उनको भी शब्द प्रदान करें और साहित्य के विकास में नए दृष्टिकोण तथा वैकल्पित अवधारणाओं को विकसित करें। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि प्रभाजी का नारीवादी लेखन सदियों से शर्म व हया का जूठा वादा ओढ़े प्राकृतिक नारी भावनाओं को बेनकाब कर अपने भीतर की तमाम घुन को बाहर ला पटकता है। तथा पितृसत्ता के दमन चक्र से स्त्री को मुक्त कराना चाहता है। वैसे प्रभा जी अपने साहित्य में स्त्री को आराजक होने की सलाह नहीं देती और न ही व्यवस्था में जीती स्त्री को सब कुछ उठा फेंकने का संदेश देती है। प्रभाजी अपने लेखन से ऐसे समाज के विरूद्ध मोर्चा संभालती है, जहाँ के सारे

नियम पुरूष का संरक्षण और नारी का दमन करने के लिए बनाये गये हैं।

भारतीय समाज में स्त्री को अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने के लिए उसको आज्ञा लेना पड़ता है पर उसे यहाँ किसी भी कार्य को करने की स्वतंत्रता नही दी गयी है। समाज में आदर सम्मान प्राप्त करने के लिए हमेशा से ही स्त्री को किसी न किसी रिश्ते के रूप में पुरूष का सहारा लेना आवश्यक होता है यही सीख दी जाती है भारतीय नारी को, प्रभा जी अपने साहित्य में सोच—विचार करने के बाद ही विषयों का चयन करती हैं। वह अपने लेखन में नारी को न्याय और स्वतंत्रता देने की पक्षधर है। इसीलिए उनकी हर कविता, उपन्यास संपादन सभी नारी को लेकर ही उनके जीवन की सारी गहराइयों को उकेरा गया है।

प्रभा एक ऐसी लेखिका है जिनके उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी के विविध स्वरूपों के दर्शन होते हैं तथा पुरूष पात्र अपने अस्तित्व की पहचान बनाने के लिए युद्ध स्तर पर क्रियाशील दिखाई देते हैं। चाहे वह प्रिया हो, रमा, प्रभा, आइवी, तालाबंदी के श्याम बाबू उसके स्वरूपों को प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने जीवन भर संघर्ष किया। कहीं पर भी कुंठित नही होती अपने अस्तित्व स्थापना हेतु खुद का एक सशक्त रास्ता बनाती है। स्वयं स्वतंत्र जीवन जीती हैं अपने आप से अपने अतीत से निरंतर लड़ने वाली प्रिया कभी हारती नहीं और न ही कहीं माँगती है। अपने रस महायज्ञ के लिए वह किसी पुरूष के आगे भीख नही माँगती। क्योंकि वह अच्छी तरह जानती हैं कि किसी पुरूष की चापलूसी करने से उसे कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। इस विषय में डॉ. धुमाल लिखते हैं— ''प्रभा खेतान के छिन्न मस्ता में कलकत्ता में रहने वाली मारवाड़ी अग्रवाल परिवार की बहुप्रिया की अस्तित्व बोध की लड़ाई की कथा है''।

उपन्यास में जो कथा कही जाती है। उसका कोई न कोई उद्देश्य होता है। डॉ. सतेन्द्र के अनुसार— ''कथात्मक साहित्य के छः तत्वों में से अन्तिम तत्व जिसमें लेखक की उस सामान्य या विशिष्टि जीवन दृष्टि का विवेचन होता है। जो उसकी कृति में कथावस्तु के विन्यास पथों की योजना वातावरण के प्रयोग आदि में सर्वथ निहित पायी जाती है। इसे लेखक का जीवन दर्शन अथवा जीवन दृष्टि जीवन की व्याख्या या जीवन की अलोचना कह सकते हैं।''

इस प्रकार कथा साहित्य के प्रमुख तत्वों में महत्वपूर्ण एवं अन्तिम तत्व जिसमें लेखक की जीवन दृष्टि का विवेचन होता है। भारतीय स्त्री यह कभी नहीं विस्तृत का पाती कि वह एक स्त्री है। भारतीय समाज व्यवस्था एवं संस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में नारी की परंपरा से संपर्कता उसके संस्कारों के कारण ही है। समकालीन महिला उपन्यासकारों ने नारी के संघर्षशील एवं स्वच्छंद रूप का चित्रण करते हुए भी अपनी जमीन अपनी परंपराओं से जुड़ी नारियों का चित्रंण किया है। प्रभा खेतान के छिनन मस्ता की कस्तूरी परंपरागत माँ का रूप है। इसलिए उसे प्रिया का ससुराल से नाराज होकर घर लौटना आयोग्य लगता है। अतः वह उसे पुनः ससुराल जाने का आग्रह करती है। इसी प्रकार अपने—अपने चेहरे की मिसेज गोयन का भी रीतू के मायके लौट आने पर अप्रसन्न रहती हैं। भारतीय परंपरा के प्रवाह के कारण उनका दृष्टिकोण यही है। कि लड़की का किसी भी स्थित में ससुराल रहना उचित है। रीतु अपने पति के विवाहनर संबंध के कारण मायके लौट आयी हैं। माँ यह समझती है कि — ''रीतू थोड़ी देखकर अनदेखा करती है। इस तरह से 10 वर्ष में तेरा घर बन जाता, अकेली बहु है। करोड़ों की बात है अरे प्यार का तूफान कब तक रहता है और ऐसी छिनाल औरतों से भला कोई प्यार करता है।''

प्रभा जी के उपन्यास 'पीली आँधी' की पदमावती छिन्न मस्ता की कस्तूरी एवं श्रीमती अग्रवार 'आओं पेपे घर चलें' की एंलिजा आदि नारियाँ परंपरागत पत्नी के रूप में चित्रित है। इसलिए वे पति के दोषों को मूक होकर सहती है। अपने—अपने चेहरे की मिसेज गोयनका पति के विवाहनर संबंध को सहन करती है। बल्कि पति से यह निवेदन भी करती है कि —

''आप उससे शादी क्यों नही कर लेते? पर अपने में हिम्मत होनी चाहिए हाँ मै तलाक—वलाक नही देने की राजा पाण्डू की दो पत्नियाँ कुंती और भाद्री कैसे मिलकर रहती थी।''

परंपरा आधुनिकता का द्वंद्व रमा में दृष्टिगत होता है। ''रमा का आधुनिक रूप यह है कि वह स्वावलंबी है। दूसरों की सहायता करती हैं। समाज की कानाफूसी की परवाह किए बिना मिस्टर गोयनका के साथ प्रेम संबंध को अंत तक निभाती है। और परंपरागत रूप यह है कि वह प्रेमी पुरूष की देहरी की मान—मर्यादा सुख्ता के लिए अपना जीवन छोड़ कर देती है। उससे अलग अपने अस्तित्व की कल्पना नही कर पाती।''

यह स्वीकार करना होगा कि भारतीय नारी अपने परंपराओं से संयुक्त रहना चाहती है। इस संबंध में नासिरा शर्मा का मत है कि—

''भारत वर्ष में जितनी बुद्धि जीवी महिलाएँ थी या हैं उतनी संसार के किसी देश में नहीं हैं। मगर यह सारी महिलाएँ पहले माँ, बहन, बेटी, पत्नी और फिर इंजीनियर, डॉक्टर, लेखक, पायलट और मंत्री हैं। जिन औरतों का विवाहित जीवन सुखमय नहीं है समाज उन्हे आदर की दृष्टि से नहीं देखता भले ही पद के कारण सम्मान करना मजबूरी हो यह अपने में एक गलत सोच है मगर हिन्दुस्तान के समाज का यथार्थ यही है।''

छिन्नमस्ता की प्रिया इस निर्णय पर पहुँचती है कि वफादारी प्यार समर्पण आदि सब स्त्रियों के संदर्भ में मात्र शुद्धिक रह गए हैं। क्योंकि—

''औरत को यह सब इसलिए सिखाया जाता है कि वह इन शब्दों के चक्रव्यूह से कभी नहीं निकाल पायें जबकि युगों से चली आती आवृत्ति की परंपरा को कायम रखे।''

स्पष्ट है कि समकालीन महिला उपन्यासकारों ने भारतीय नारी के आचार–विचार का सर्वाग चित्रण करते हुए उसके परंपरागत रूप को रेखांकित किया है। भारतीय नारी कितनी भी आधुनिक हो वह अपनी परंपराओं को विस्तृत नहीं करती। अपने दैनिक व्यवहार में इन परंपराओं का पालन पोषण करती हैं। नारी शोषण भारत की सनातन समस्या है। नारी शोषण के दो प्रकार है। पारिवारिक शोषण एवं सामाजिक शोषण परिवार में नारी, पुत्री, पति, माँ के रूप में शोषित हो रहीं हैं। उसका यह शोषण आर्थिक दृष्टि से भी हुआ है। उसके प्रति समाज का दृष्टिकोण कभी संतोष जनक नहीं रहा है। कभी वह दहेज के नाम पर तो कभी यौन दृष्टि से उत्पीड़न रही है। जगदीश्वर चतुर्वेदी के शब्दों में –

''पुरूष अपनी अस्तिमा का स्वयं निर्माता था। किन्तु स्त्री में जब अपने हकों की माँग की अपने लिए सार्वजनिक जीवन में स्थान स्पष्ट अभिव्यक्ति स्वतंत्र पहचान एवं लिखने की कोशिश की लज्जा को त्यागकर सहज शैली में व्यवहार करना शुरू किया पुरूष निर्मित ढाँचे, नियमों, मूल्यों एवं रिवाजों से विचलन को बदनामी का रूप दे दिया गया।''

हम चाहे जितना गार्गी, अपाला, मैचेयी तथा अन्य धर्मशस्त्रों का हवाला दें इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि सभी धर्मों ने दुनिया भर में स्त्रियों को दोयम दर्जे की नागरिकता सौंपी है। उसका बड़ा कारण धार्मिक आचार–विचार और वियमन पर पुरूषों का नियंत्रण रहा है। इसलिए उन्होंने सारे अधिकार सारी स्वतंत्रताएँ अपने पास रखीं और सारी जिम्मेदारी स्त्री के सिर पर थोपी हैं।

निष्कर्ष

स्त्री की सफलता की यह तस्वीर जो आज हमें देखने को मिल रही है वह देखने और सुनने में बड़ी ही सुहानी लगती हैं लेकिन इसके पीछे के वर्षों के संघर्ष की गाथा बहुत ही कष्टमय रही हैं। क्योंकि जिस समाज में स्त्री का घर की देहरी से पाँव बाहर रखना भी अपराध के समान माना जाता रहा हो उस समाज से अपने हक की उम्मद लगाना औरत के लिए सपने में भी आसान नहीं था लेकिन इतनी कठिन राह होने के बाद भी अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति व अग्नि आत्म विश्वास के बल पर स्त्री ने स्वयं को इस लड़ाई के लिए तैयार किया और परिवार व समाज में पल रही रूढ़ियों और कुरीतियों से लड़ने का उनसे जीतने का बीड़ा उठाया जिसका परिणाम आज हमारे सामने हैं। कि स्त्री देश के हर सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। और समाज भी उसे आगे बढ़ने के अवसर प्रदान कर रहा है। भारत में पुर्नजागरण की लहर फैला चुकी हैं। जॉब मार्केट में औरतों के लिए अवसर बढ़ गये हैं। जिसकी वजह से औरत अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में योगदान दे रही हैं आज हमारे यहाँ अनुआगा, सुलज्ज, फिरोदिया, नेहा पदम जी, किरण मजूमदार, नैना, लाल किदवई, रेणुका, रामनाथ, मन्दिरा हुई जैसी महिलाएँ हैं जिन्हे नेतृत्व की कमान अपने हाथ में थामी हुई।

संदर्भ सूची

1. भारतीय साहित्य अध्ययन की नई दिशाएँ–डॉ0 प्रदीप श्रीधर, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, संस्करण 2010
2. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी– डॉ. कामिनी तिवारी, विद्या प्रकाशन कानपुर, , संस्करण 2011
3. प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी– डॉ. अशोक मराठे, विद्या प्रकाशन गुजैनी कानपुर संस्करण 2012
4. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ– प्रभा खेतान, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, संस्करण 2004
5. छिन्नमस्ता–प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, दरियागंल दिल्ली– संस्करण 1993
6. अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य– राजेन्द्र यादाव अर्चना वर्मा, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2001
7. सीमोन द बोउवार–स्त्री उपेक्षिता– प्रभा खेतान अनुवादक– हिन्दी पॉकेट बुक्स जोरबाग नई दिल्ली संस्करण 2004
8. भारतीय समाज संस्थायें और संस्कृति– डॉ. रामनाथ शर्मा, राजेन्द्र कुमार शर्मा, एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली संस्करण 1995